B.A Part IV

Topic - 1 लकारों का सामान्य परिचय

लट् । लिट् । लुट् । लृट् । लेट् । लोट् । लङ् । लिङ् । लुङ् । लृङ् । एषु पञ्चमो लकारश्छन्दोमात्रगोचरः ।

लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः ।

लकाराः सकर्मकेभ्यः कर्मणि कर्तरि च स्युरकर्मकेभ्यो भावे कर्तरि च ।

सकर्मक = धातुओं से कर्ता और कर्म में तथा अकर्मक = धातुओं से कर्ता और भाव में लकार होते हैं ।

धातु चाहे सकर्मक हो या अकर्मक - कर्ता दोनों में ही आता है । अतः लकार का प्रयोग तीन ही रूपों में होगा - कर्ता, कर्म और भाव में इनको ही क्रमशः कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाव-वाच्य की संज्ञा दी गई है । वस्तुतः इस सूत्र का अभिप्राय इन्हीं वाच्य-विभेदों को स्पष्ट करना है । वाच्य-परिवर्तन के साथ-साथ वाक्य-रचना में भी अन्तर पड़ जाता है । उदाहरण के लिए कर्तृवाच्य में लकार कर्ता में होता है । तात्पर्य यह है, कि लकार का वचन और पुरुष कर्ता के अनुसार ही होता है । 'राम पुस्तकं पठति' यहाँ कर्ता 'रामः' के अनुसार ही 'क्रिया' 'पठति' का प्रयोग हुआ है । कर्मवाच्य में कर्म प्रथमान्त और कर्ता तृतीयान्त होता है । इस प्रकार लकार का सम्बन्ध कर्ता से न होकर कर्म से हो जाता । उदाहरणार्थ 'रामेण रावणः हतः' में कर्म 'रावणः' के अनुसार ही 'क्रिया' 'हत' प्रयोग होता है । भाववाच्य में क्रिया का केवल होना मात्र दिखाया जाता है, सदैव प्रथम पुरुष एकवचनान्त होती है ।

यहाँ लकार कर्ता और कर्म - दोनों से ही स्वतंत्र होजाता है। 'देवदत्तेन स्वीयते' में क्रिया का लकार कर्ता अथवा कर्म से अनुशासित नहीं है। सूत्र में कर्ता, कर्म और भाव में लकार कहने का यही तात्पर्य है।